प्रस्तावना

प्रो॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' बहुभाषाविद है । आपने लेखन-कार्य मुख्यत: हिंदी में किया है । आपकी पचासों पुस्तकाकार कृतियाँ एवं सैकड़ों गवेषणात्मक-आलोचनात्मक लेख प्रकाशित हुए हैं । आप के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबन्धित तीन शोध प्रबंध भी लिखे जा चुके हैं । डॉ॰ 'मागध' का लेखन मूलत: तीन प्रकार का हैं – हिंदी साहित्य और समाज विषयक, असमिया साहित्य और समाज विषयक और हिन्दू देव शास्त्रीय विषयक । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध डॉ॰ 'मागध' के असमिया साहित्य और समाज विषयक है । डॉ॰ 'मागध' ने असमिया साहित्य से संबंधित कई आलोचनात्मक ग्रंथ एवं लेख लिखे हैं । अस्तु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का शीर्षक है "आलोचना साहित्य में प्रो॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' का योगदान (असमिया आलोचना साहित्य के विशेष संदर्भ में) ।" शीर्षक से ही स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में डॉ॰ 'मागध' द्वारा असमिया साहित्य पर आधारित सम्पूर्ण आलोचनात्मक कृतियों को अध्ययन का विषय बनाया गया है ।

डॉ॰ भोलाशंकर व्यास जी के अनुसार भारतीय संस्कृति की तरह ही भारतीय साहित्य भी युगानुरूप समन्वय भावना को स्वीकार कर विकसित होता रहा है । आर्य, द्रविड़, निषाद (आग्नेय अथवा आस्ट्रिक) और किरात (मंगोल) संस्कृतियों के संघटन-समन्वय का सुदीर्घ परिणाम है - भारतीय संस्कृति । समन्वय गंगा भिन्न-भिन्न क्षेत्रीय संस्कार-सरिताओं को अपने क्रोड़ में समेट कर ही भारतीय संस्कृति-सिंधु तक पहुँचती है । इस दृष्टि से भारतीय साहित्य उसका सदा परिपूरक रहा है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि साहित्य संस्कृति का प्रयोग क्षेत्र है, जहाँ सांस्कृतिक तत्त्वों की व्यावहारिकता का विश्लेषण, प्रमाणीकरण और स्थापन होता है । इसके निमित्त भारतीय साहित्य युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप किसी नायक अथवा भाव विशेष को वर्ण्य-विषय के रूप में उपस्थित करता रहा है, जिससे रचना तो अमर हुई ही है, समाज और लोकरुचि को भी नया क्षितिज मिला है । यही कारण है कि हिंदी, असमिया, बंगला, उड़िया, मराठी,

गुजराती, पंजाबी, तमिल, तेलुगु इत्यादि विभिन्न भाषिक इकाइयों में बँटी और विभिन्न भाषा-भूषा में सजी भारतीय जनता की आत्मा एक ही दिखायी पड़ती है । उक्त भाषाओं के साहित्य पर भी यही बात लागू होती है । अभिव्यंजना-शिल्प में किंचित अंतर के बावजूद उनमें मूल भाव और विचार गति प्राय: एक सी है । एक साथ मिलकर चलने, बोलने, विचार करने की भारत-वाणी वैदिक काल से ही गूँजती रही है ।

भारत की सभी महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक-सामाजिक, अत: साहित्यिक आंदोलन प्राय: राष्ट्रव्यापी रहा है । मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का स्वरूप भी राष्ट्रव्यापी था । यों, उसमें कतिपय क्षेत्रीय विशेषताएँ भी विकसित हुई थी । भक्ति आंदोलन के परिणाम स्वरूप हिंदी, असमिया, बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तमिल, तेलुगु इत्यादि में राम एवं कृष्ण संबंधी जो विपुल साहित्य निर्मित हुआ, वह वैविध्यपूर्ण होते हुए भी कदाचित एक सी प्रेरणाओं से अनुप्राणित होने के कारण प्राय: एक ही भाव सूत्र में गुंफित है । उसके शब्द प्रति शब्द में भक्ति भाव ही व्याप्त है । अंतर केवल भाषा और किंचित अभिव्यंजना पद्धति का है । अतएव, मध्यकाल की किसी भावधारा अथवा कवि विशेष के सर्वांग पूर्ण अध्ययन के लिए समकालीन धाराओं अथवा कवियों का सम्यक अवलोकन अनावश्यक नहीं । इस संबंध में विभिन्न व्यक्तियों की घोषणाओं के बहुत वर्ष पूर्व भी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा था –"भारतवर्ष का मध्यकालीन साहित्य वस्तुत: समूचे भारतवर्ष का साहित्य है । प्रांतवार बंटा हुआ विभिन्न बोलियों का नहीं ---------- जो लोग तत-तत प्रांतीय सीमाओं में बाँधकर मध्यकालीन साहित्य के अध्ययन का प्रयत्न करते है, वे विसमिल्ला ही गलत बोल देते है । ------सूरदास को अच्छी तरह से समझने के लिए यदि हम सम्पूर्ण सूरदास के साहित्य का या कुछ और अधिक बढ़कर ब्रजभाषा के साहित्य का ही अध्ययन करे, तो उस महान रस समुद्र का एक ही पहलू देख सकेंगे, जिसे उत्तर मध्यकाल के भक्त कवियों की अमर वाणी स्वरूप निर्झरणियों से भर दिया है । सूरदास को समझने के लिए विद्यापति, चंडीदास और नरसी मेहता को समझना परम आवश्यक हैं ।" ऐसा प्रतीत होता है कि

उक्त उद्धरण के अंतिम वाक्य में आचार्य द्विवेदी द्वारा गिनाये गए नामों में हमारे विवेच्य श्रीमंत शंकरदेव का नाम जुड़ना आवश्यक है ।

मध्यकालीन भारतीय साहित्य के भावैक्य को लक्ष्य कर ही डॉ॰ नगेन्द्र ने 'भारतीय वङ्ग्मय' में लिखा है – "सुर का वात्सल्य वर्णन हिंदी काव्य में घटनेवाली आकस्मिक या एकांतिक घटना नहीं थी । गुजराती कवि भालण ने अपने आख्यानों में, पंद्रहवीं शती के मलयालम कवि ने कृष्णगाथा में, असमिया कवि माधवदेव ने अपने बड़े गीतों (बरगीतों) में अत्यंत मनोयोगपूर्वक कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया है ।" डॉ॰ नगेंद्र ने जिस असमिया कवि माधवदेव का उल्लेख किया है, वे श्रीमंत शंकरदेव के ही शिष्य थे । शंकरदेव द्वारा प्रचारित महापुरुषिया भक्ति धर्म को माधवदेव ने ही व्यवस्था दी थी । अतएव, अनुमान किया जा सकता है कि सूरदास के समुचित अध्ययन के लिए जैसे गुजराती कवि भालण अथवा असमिया कवि माधवदेव का अध्ययन अपेक्षित है, ठीक वैसे ही कवि शंकरदेव का भी होना चाहिए ।

अस्तु, स्थापित होता है कि एक ही काल में प्राय: एक सी प्रेरणाओं से उत्पन्न विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में रचित विशाल भक्ति काव्य की कृष्ण भक्ति धारा विशेष के सम्यक अनुशीलन द्वारा हम भारतीय साहित्य की जीवंत एकता का सूत्र सुलझा सकते है । महान प्रतिभाएँ चाहे किसी भी क्षेत्र या युग विशेष में उत्पन्न हो, उन्हें उनके युग और समकालीनों से काट कर सर्वथा स्वतंत्र इकाई मान लेना गलत होगा । डॉ॰ 'मागध' की मान्यता है कि वर्तमान भारत में भावात्मक एकता के नारे तो बहुत लगाए जाते हैं पर व्यवहार पक्ष उसके प्रतिकूल दिखाई पड़ता है ।

भाषा-भेद, प्रांत-भेद, जाति-भेद, संप्रदाय-भेद आदि नामों पर नित्य नए-नए आंदोलन किए जाते हैं । इनसे देश निरंतर विखंडन और विभाजन, अत: विघटन की ओर बढ़ता जा रहा है । इन विघटनकारी सूत्रों को समाप्त करने के लिए हमें बहुलता में ही एकता के सूत्र खोजने होंगे जिनके आधार पर भारत को टूटने से बचाया जा सकेगा । आज वैयक्तिक जीवन प्रवृति की होड़ में सामाजिक जीवन ध्वस्त हो रहा है । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय अस्मिता के

समाप्त होने पर राष्ट्र ही नहीं व्यक्ति भी महत्व शून्य हो जाता है, चाहे वह नर रूपी नारायण ही क्यों न हों । अस्तु प्रस्तुत शोध कार्य की आवश्यकता स्वतः स्पष्ट हो उठती है । तात्पर्य यह है कि राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एकन्वयन के लिए उपयोगी समान भावों और विचारों का उदघाटन जो क्षेत्रीय भाषाओं (असमिया) में हुआ हैं, उसकी परख आवश्यक है । डॉ॰ 'मागध' के असमिया आलोचनात्मक ग्रन्थों पर विचार इन दृष्टियों से किया गया हैं ।

डॉ॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' के व्यक्तित्व और कृतित्व पर कई ग्रंथ तथा शोध प्रबंध लिखे जा चुके हैं, यथा –

(क) संस्कृति साधक प्रो॰ कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध'- संपादक डॉ॰ ए॰ के॰ नाथ (अभिनंदन ग्रंथ), 2003

(ख) डॉ॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' व्यक्तित्व और कृतित्व – डॉ॰ भूपेंद्र सिंह (पी. एच. डी. शोध प्रबंध) राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, 2002

(ग) डॉ॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' जीवन और साहित्य - वीणा वर्मा (पी. एच. डी. शोध प्रबंध) मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, 2009

(घ) प्रो॰ 'मागध' की विचारधाराओं का अध्ययन – सुधांशु कुमार (लघु शोध प्रबंध) नव नालंदा बौद्ध महाविहार, नालंदा (डीम्ड विश्वविद्यालय), 2011

उपरिवत उल्लेखों को देखने से स्पष्ट होता है कि 'मागध' कृत असमिया आलोचना पर अद्यावधि कोई काम नहीं हुआ है । असमिया आलोचना से संबन्धित उनके कई ग्रंथ और लेख प्रकाशित हैं । कई प्रकाशित ग्रंथ विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत भी हो चुके हैं । कुछ ग्रंथ पहली बार 'मागध' जी ने ही लिखा है, जिन पर एकीकृत विचार नहीं हुआ है । अस्तु, उन सब पर विचार करना, उनका महत्त्वकरण करना, उनमें व्यक्त विचार की परीक्षा-निरीक्षा कर प्रकाश में लाना आवश्यक हो जाता हैं । इसी कारण प्रस्तुत शोध प्रबंध के विषय का चुनाव असमिया आलोचना तक सीमित रखा गया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य का शीर्षक "आलोचना साहित्य में प्रो॰ कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' का योगदान (असमिया आलोचना साहित्य के विशेष संदर्भ में)" अपने आप में स्पष्ट है । यहाँ डॉ॰ 'मागध' द्वारा लिखित असमिया साहित्य पर विचार विश्लेषण किया गया है । उनकी असमिया आलोचना मूलत: मध्यकाल अर्थात वैष्णव भक्तिकाल विषयक है, उसके अतिरिक्त थोड़ी बातें आधुनिक काल और अपभ्रंश साहित्य से भी संबंधित है । तात्पर्य यह है कि यद्यपि वे मुख्यत: असमिया वैष्णव साहित्य के आलोचक रहे है, तथापि उन्हें वहीं तक सीमित न कर उनकी अन्य आलोचना जैसे असमिया रामकथा आदि पर भी विचार किया गया है । डॉ॰ 'मागध' कृत असमिया आलोचना विभिन्न प्रकार के हैं, कुछ रचनाएँ तुलनात्मक हैं, कुछ ऐतिहासिक हैं और कुछ व्याख्यात्मक तथा कुछ साहित्यकार विशेष के मूल्यांकन आदि से संबंधित हैं । अस्तु, पूरे शोध प्रबंध में किसी एक प्रकार की शोध प्रक्रिया नहीं अपनायी गयी है । आवश्यकतानुसार इसमें तुलनात्मक, ऐतिहासिक, गवेषणात्मक आदि शोध प्रक्रियाओं का यथा स्थान उपयोग किया गया हैं ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को लिखने के क्रम में कई पुस्तकों का अध्ययन करना पड़ा । 'मागध' जी की कृतियों का अध्ययन करने के क्रम में उनकी विद्वता का ज्ञान होने लगा और उनके वैदूष्य के प्रति श्रद्धानत होती गयी । प्रबंध में 'मागध' जी के व्यक्तित्व को उभारने में कुछ बाकी न रह जाए इसलिए 'मागध' जी के पटना निवास में जाकर उनसे भेंट की । उनके भाई प्रेम नारायण से 'मागध' जी के बारे में काफ़ी कुछ जानकारी प्राप्त की । 'मागध' जी की शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद उनके सान्निध्य में रहकर जो तथ्य संकलित कर पायी उस कारण 'मागध' जी को धन्यवाद देती हूँ और साथ ही प्रेमनारायण जी के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ । शोध प्रबंध की लेखन प्रक्रिया में प्रारम्भ से शोध निर्देशक प्रो॰ अनन्त कुमार नाथ से मुझे काफ़ी सहायता मिली है । डॉ॰ नाथ जो स्वयं गुरुवर डॉ॰ 'मागध' के शिष्य है, उनसे 'मागध' प्रणीत कई कृतियाँ प्राप्त हुई हैं । उनकी सहायता और योग्य निर्देशन के बिना प्रस्तुत शोध प्रबंध लेखन अतीव मुश्किल होता । शोध प्रबन्ध को परिपूर्णता उनके कारण ही मिल पायी है । शब्दों से उनका आभार

व्यक्त करना मात्र औपचारिकता ही होगी, फिर भी गुरुवर डॉ॰ नाथ को धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ । गुरुवर डॉ॰ नाथ का आशीष सदा बना रहे, यही कामना है । पूजनीय माता-पिता और गुरुवर डॉ॰ नाथ जी को यह शोध प्रबंध समर्पित करती हूँ । उनके प्रोत्साहन और स्नेहाशीष के बिना शोध प्रबंध लिखने का कार्य पूरा न हो पाता । विभाग के सभी गुरुजनों डॉ॰ सूर्यकांत त्रिपाठी, डॉ॰ अनुशब्द, डॉ॰ अंजुलता ने किसी न किसी प्रकार सहायता की है । उनके प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ । साथ ही अपने मित्रों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने विभिन्न प्रकार से सहयोग किया है ।

शोध-कार्य के दौरान कई विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में जाने का मौका मिला । पुस्तकालयों से सामग्री संग्रह किए बिना यह शोध-कार्य पूरा नहीं हो पाता । दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, पूर्वोत्तरीय क्षेत्रीय विश्वविद्यालय, गौहाटी विश्वविद्यालय, तेज़पुर विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों से काफ़ी सहायता प्राप्त हुई । प्रत्येक पुस्तकालय मानो ज्ञान का भंडार हैं.... नवीन एवं पुरातन ज्ञानों के भंडार से सम्बृद्ध हैं, यें पुस्तकालय । शोध-कार्य को आगे बढ़ाने में इनसे काफ़ी सहायता मिली । इसी संयोग में उन सब के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करती हूँ ।